

चूत की खुजली और मौसाजी का खीरा-1

“मैं अपनी पढ़ाई के लिए शहर में अपनी मौसी के घर में रहने लगी. लेकिन मेरे फ़ौजी मौसाजी बहुत सख्त थे तो मेरी चूत को लंड मिलने बंद हो गए. ...”

Story By: nitu patil (nitupatil)

Posted: Wednesday, October 3rd, 2018

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [चूत की खुजली और मौसाजी का खीरा-1](#)

चुत की खुजली और मौसाजी का खीरा-1

नमस्ते दोस्तो, मैं नीतू पाटिल फिर से आई हूँ मेरी इन्सेस्ट सेक्स स्टोरी हिंदी में लेकर!

मेरी पिछली कहानी

पेयिंग गेस्ट से कामवासना की तृप्ति-1

को पढ़ने और पसंद करने के लिए धन्यवाद। आपके ढेर सारे मेल्स मुझे नई नई कहानी लिखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आप मेरी सभी कहानियाँ ऊपर मेरे नाम पर क्लिक करके पढ़ सकते हैं।

मैं अपने माँ पापा की इकलौती संतान हूँ, मेरे पापा का गांव में खुद का बहुत बड़ा बिज़नेस है। मेरी हाइट 5'4" है, रंग गोरा है, आँखें नशीली हैं, गुलाबी उभरे हुए गाल है, मखमली होंठ है, मेरे बाल लंबे हैं, लंबी नुकीली नाक है, छाती 34 की कमर 28 और नितम्ब 35 के हैं। मैं अपनी कमर में एक चांदी की चैन पहनती हूँ, पैरों में पायल और नाक में छोटी सी नथ पहनती हूँ।

बारहवीं की परीक्षा होने के बाद मेरा रिजल्ट आया। अच्छे मार्क्स होने की वजह से मेरा अच्छे कॉलेज में कॉमर्स शाखा में एडमिशन मिलना तय था। मैंने और मेरे परिवार ने दो तीन कॉलेज शॉर्टलिस्ट किये थे। बहुत सोचने के बाद मेरी माँ ने शहर के एक कॉलेज में मेरा एडमिशन कराने का फैसला किया।

उसकी दो वजह थी, एक तो उस शहर में मेरी मौसी रहती थी तो मुझे रहने की कोई प्रॉब्लम नहीं थी। और दूसरी बात के मेरी दादी अक्सर बीमार रहती थी तो मेरी मौसी हमेशा उसकी देखभाल करने गांव चली जाती थी, मेरे वहां होने से उनके पति के खाने पीने की टेंशन दूर हो जाती और मौसी भी ठीक से दादी का ख्याल रख पाती।

फिर एक दिन मैं और पापा एडमिशन लेने के लिए शहर आ गए। रात को ट्रेन में बैठ गए और सुबह शहर पहुँच गए। मेरे मौसी के पति जिन्हें मैं कर्नल अंकल बुलाती थी वह हमें लेने स्टेशन पर आ गए। फिर हम तीनों घर गए वहाँ फ्रेश हो कर कॉलेज एडमिशन लेने पहुँच गए, एडमिशन होने के बाद हम घर वापिस आ गए। हम सबने रात का खाना साथ में खाया, फिर पापा उसी रात की गाड़ी से वापस गांव चले गए।

मेरी मौसी स्कूल में टीचर थी पर दादी की बीमारी की वजह से उन्होंने स्वेच्छा से रिटायरमेंट ले ली, मौसाजी आर्मी में कर्नल रह चुके थे और अब रिटायर हो गए थे। उनका एक बेटा था उसकी शादी हो गयी थी, वो और उसकी बीवी दोनों अमेरिका में बस गए थे। शहर में आने के बाद मैं, मौसी और मौसा जी पहले दो तीन दिन शहर घूमे, वाटर पार्क गए बहुत एन्जॉय किया।

फिर अगले हफ्ते से मैंने कॉलेज जॉइन किया और धीरे धीरे शहर की जिंदगी में घुलमिल गयी।

कर्नल अंकल की वजह से घर का माहौल बहुत स्ट्रिक्ट था। समय पर कॉलेज जाना, समय पर वापस आना, वो मेरी पढ़ाई पर भी काफी ध्यान देते थे। इस बीच दो तीन महीने कब बीत गए पता ही नहीं चला, मौसी भी दो तीन बार छह सात दिन के लिए दादी के घर भी गयी थी। मैं शहर आयी उसी दौरान मौसी ने एक नौकरानी संगीता को काम पर रखा था, जिस वजह से मुझ पर काम का कोई बोझ ना पड़े और मेरी पढ़ाई अच्छे से हो सके।

पर जिस लड़की को हफ्ते में तीन चार बार चुदने का चस्का लगा हो उसको बिना चुदे नींद कैसे आएगी। मुझे अपने तीन चार बायफ्रेंड्स के मोटे लंड चुत में लेने की आदत सी हो गयी थी। कर्नल अंकल के स्ट्रिक्ट स्वभाव की वजह से मेरा लैंगिक कुपोषण हो रहा था। मेरी जवान बुर को लंड की जरूरत थी और वह ना मिलने से मैं मायूस रहने लगी थी। चुत में लगी आग को सहन ना होने के पर मैं स्टडी टेबल से उठ कर सीधा बाथरूम में गयी।

क्या दिन थे जब मैं मेरे बॉयफ्रेंड्स के साथ होटल के बाथरूम में शावर के नीचे भी चुदती थी और क्या आज का दिन है, मेरी चुत को तुरन्त लंड की जरूरत थी। चुदाई के ख्याल आते ही मैंने पहनी हुई नाईटी उतार दी, अंदर पहनी हुई डिजाईनर ब्रा और पैंटी में बहुत मादक लग रही थी। ब्रा से बाहर निकलने को बेताब हो रहे मेरे स्तनों को आईने में देख कर मैं खुद ही उनको ब्रा के ऊपर से मसलने लगी, जोश मैं मैंने ब्रा का हुक निकाल दिया।

मेरा दूसरा हाथ अपने आप ही मेरी पैंटी में घुस गया और मैं अपनी उंगली चुत में डाल कर अंदर बाहर करने लगी। धीरे धीरे मुझे पैंटी भी चुभने लगी, मैंने उसे भी उतार दिया। मैं बाथ टब में बैठ कर पूरे जोश में चुत में उंगली करने लगी, पर मेरी नाजुक उंगलियाँ मुझे वह सुख नहीं दे रही थी जो एक मजबूत लंड देता है। पर लंड ही तो नहीं था मेरे पास तो उंगली से ही मेरी चुत में लगी आग को शांत करने लगी, पर आग शांत होने का नाम नहीं ले रही थी।

क्या करूँ समझ नहीं आ रहा था, चुत की आग बढ़ने ही लगी थी, उसको लंड या लंड जैसी कोई चीज चाहिए थी। पर क्या ??? कुछ समझ नहीं आ रहा था, बड़ी बैचनी हो रही थी। कुछ तो करना बहुत जरूरी था, अंदर क्या डालूँ जिससे लंड वाली फीलिंग आये ?

मैं सोच ही रही थी कि तभी मुझे ख्याल आया अंकल आज ही बाजार से कुछ सब्जियाँ लाये हैं। येस ... येस ... वह चीज बिल्कुल लंड के जैसी थी, और उसको मैं आराम से मेरी बुर के अंदर डाल सकती थी।

मैंने झट से पैंटी पहनी, ब्रा ढूँढी पर कहाँ फेंकी थी, पता ही नहीं चला तो बिना ब्रा के ही गाउन पहन लिया। मन तो कर रहा था कि नंगी ही किचन में चली जाऊँ और फ्रिज से वह चीज लेकर के रूम में आऊँ, घर में अंकल और मेरे अलावा कोई भी नहीं था, और अंकल भी जल्दी ही सोते हैं।

पर रिस्क न लेते हुए मैंने कपड़े पहन लिए।

बाथरूम से बाहर आकर जैसे ही मैंने बेडरूम के बाहर कदम रखा, ठंडी हवा की लहर मेरे बदन को छू गयी। एक तो बाहर बारिश हो रही थी और दूसरी के मेरा गाउन बहुत छोटा था, कंधे पर दो स्ट्रिप्स थे और गाउन लगभग मेरी जांघों को ही ढक पा रहा था। अंदर ब्रा नहीं थी तो उस पतले से कपड़े के अंदर मुझे बहुत ठंड लग रही थी। उस ठंड से मेरी कामुकता तो और ही बढ़ रही थी। बाहर आकर मैंने दीवार पर देखा तो घड़ी में बारह बजे थे।

मैं तेजी से रसोई में गयी, बाहर के स्ट्रीट लाइट की रोशनी कांच की खिड़की से अंदर आ रही थी तो रसोई में काफी रोशनी थी। तो लाइट जलाने की जरूरत नहीं थी, वैसे भी मुझे फ्रिज से वह चीज ले कर के मेरे रूम में भागना था।

मैंने फ्रिज का दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही अंदर की ठंडी हवा मेरे बदन से टकराई और मेरा बदन ठंड से कांपने लगा। मैंने झट से नीचे झुकते हुए सब्जी का ड्रावर खोला, थोड़ी देर ढूंढने के बाद आखिरकार मुझे वह चीज मिल ही गयी।

खीरा ...

आज ही बाजार से लाया गया था और धोकर फ्रिज में रखा गया था, उनमें से एक मैंने उठा लिया। बिल्कुल सीधा और मोटा ... एक बार मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, अब वही मेरी लंड की जरूरत को पूरी करने वाला था। उसको चुत के अंदर बाहर करने के बाद मुझे चुदाई वाली फीलिंग आने वाली थी, यही सोच कर मैं खुश हो रही थी। उसी खुशी में उस खीरे को मैं अपनी जीभ से चाटने लगी, जैसे कि वह खीरा न हो लंड ही हो।

चाटते हुए मैं अपने मुँह को खोल कर खीरे को चूसने लगी जैसे मानो उस लंड रूपी खीरे को ब्लो जॉब दे रही हो। खीरे को लेकर के मैं झट से अपने रूम में जाने वाली थी पर उसको देख कर मुझे कंट्रोल नहीं रहा और किचन में ही उसको मुँह में लेकर चूसने लगी।

उत्तेजना में मैं खीरे को मुँह में से निकालकर अपने जांघों पर रगड़ने लगी। उसका वह ठंडा

स्पर्श मेरी उत्तेजना और बढ़ाने लगा। मैंने खड़े खड़े ही अपने पैर फैला दिए और खीरे को पैंटी के ऊपर से ही चुत पर रगड़ने लगी। जैसे जैसे उसको चुत पर घिस रही थी मुझे अलग ही उत्तेजना महसूस हो रही थी।

वह खीरा मुझे पागल करने लगा था, धीरे से पैंटी के कपड़े को मेरी चुत से अलग करके मैं खीरे को अपने चुत की दरार पर घिसने लगी, अब मुझे कंट्रोल करना मुश्किल हो गया। मैं अपने पैर फैलाकर खीरे को अपनी चुत के अंदर दबाने लगी तो मेरे रोंगटे खड़े होने लगे। उसी प्रयास में मैंने अपनी नाईंटी ऊपर उठायी, फिर पैंटी को कमर से नीचे सरकाते हुए घुटनों के नीचे ले गयी और उतार दी।

अब खीरे का रास्ता साफ था मैंने पैर फैलाकर एक हाथ से मेरी चुत की दरार को खोल दिया और दूसरे हाथ से खीरे को मेरी चुत में घुसाने लगी।

“आहऽऽऽ... ऊई माँऽऽऽ... हम्म...”

खीरा चुत में घुसते ही उसके ठंडे स्पर्श की वजह से मैं सिसक उठी, धीरे धीरे उसका चुत में घुसाते वक्त मुझे काफी उत्तेजना महसूस हो रही थी। पिछले तीन चार महीने से चुत में लंड नहीं घुसा था, और खीरा लंड से थोड़ा मोटा था तो अंदर जाते वक्त मेरी चुत को फैला रहा था, मैं कामज्वर से पागल हो रही थी।

धीरे धीरे मैंने आधे से ज्यादा खीरे को अपनी चुत में घुसाया, फिर चुत को सिकोड़ते हुए अंदर लंड को महसूस किया। यह आईडिया मुझे पहले क्यों नहीं आया था, वह खीरा मेरी चुत को लंड वाली फीलिंग दे रहा था।

मैं दोनों पैरों को करीब लाते हुए खड़े खड़े दाये पैर की उंगलियों पर खड़ी हुई, फिर एड़ी को नीचे लाते हुए बायें पैरों की उंगलियों पर खड़ी हुई, मेरी जांघें एक दूसरे से रगड़ने लगी थी पर उस खीरे के मेरी चुत की दीवारों से घिसने से अजीब से सुरसुराहट हुई। न चाहते हुए मैं अपनी आँखें बंद करते हुए दोनों पैरों से कदमताल करने लगी- दाहिने बायें... दाहिने बायें

...

स्कूल की परेड को याद करते हुए मैं खड़े खड़े ही कदमताल कर रही थी, उस वजह से खीरा चुत की दीवारों पर घिसते हुए अजीब सा सुख दे रहा था। पैर करीब होने से वह मेरी चुत के दाने को भी रगड़ खा रहा था, कदम ताल की वजह से खीरा धीरे धीरे नीचे की ओर सरक रहा था और अंत में चुत से सटक कर जांघों से नीचे गिर गया।

मैंने नीचे झुकते हुए उसको उठा लिया, फ्रिज की रोशनी की वजह से खीरे पर लगा मेरी चुत का रस चमक रहा था। मैं फिर से उसे अपने चुत में घुसा कर कदमताल करने लगी, वो फीलिंग मुझे सातवें आसमान पर ले जा रही थी।

“नीतू बेटा, आर यू ओके ?”

“नीतू बेटा, तुम ठीक तो हो ना...”

मेरी कामुकता की कहानी जारी रहेगी. आपको मेरी इन्सेस्ट सेक्स स्टोरी कैसी लग रही है? मुझे मेल करके बतायें।

मेरा मेल आई डी है nitu.patil4321@gmail.com

